संपादकीय

उम्मीद जगाते नतीजे

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की बारहवीं परीक्षा के परिणाम नई उम्मीद व उत्साह जगाने वाले हैं। खासकर इस मायनों में भी लड़कियां न केवल शीर्ष पर रही बल्कि उनका पास होने का कुल प्रतिशत भी लड़कों के मुकाबले कहीं ज्यादा है। इस परिणाम को सामाजिक बदलाव की आहट के रूप में देखा जाना चाहिए। साथ ही इस अंतर की वजह भी तलाशी जानी चाहिए। जाहिर है यह आंकड़ा आगे उच्च शिक्षा संस्थानों में प्रवेश व प्रतियोगी परीक्षाओं के अलावा नौकरियों में फर्क उत्पन्न करेगा। यह भी कम आश्चर्यजनक नहीं है कि शीर्ष पर भी दो लड़कियां ही हैं और उन्होंने पांच सौ से सिर्फ एक अंक कम हासिल किया तथा साथ ही 498 अंकों के साथ दूसरी रैंकिग भी लड़की ने ही हासिल की। कुल मिलाकर लड़कियों ने परीक्षा में लड़कों के मुकाबले 9 प्रतिशत बेहतर प्रदर्शन किया। परीक्षार्थी भी पिछले साल के मुकाबले एक लाख अधिक रहे। इन परीक्षा परिणामों का एक उत्साहवर्धक पक्ष यह भी है कि केंद्रीय विद्यालय का परीक्षा परिणाम सबसे बेहतर रहा और इसके 95.5 फीसदी विद्यार्थी परीक्षा में सफल रहे। दूसरे नंबर पर पिछड़े इलाकों के गरीब प्रतिभावान बच्चों के लिए खोले गये नवोदय विद्यालयों का परीक्षाफल रहा। यह सुखद संकेत है कि देश के दूरदराज के पिछड़े इलाकों में शिक्षा के प्रति गंभीरता व जुनून बढ़ रहा है। निजी स्कूलों का तीसरे नंबर पर आना भी यह निष्कर्ष देता है कि खर्चीली शिक्षा प्रणाली व बाहरी चमक-दमक बेहतर परीक्षा परिणामों की गारंटी नहीं है। इसी तरह महानगरों के मुकाबले ग्रामीण व छोटे शहरों का परीक्षा परिणाम बेहतर होना भी सुखद संकेत है। लेकिन इसके साथ ही फिर पुराने सवाल सामने आते हैं कि क्या सीबीएसई की परीक्षाओं के मूल्यांकन का पैमाना इतना वैज्ञानिक व प्रामाणिक है कि छात्र पांच सौ में से लगभग पूरे-पूरे अंक हासिल कर लें एक बार को विज्ञान व गणित में तो यह सोचा जा सकता है कि इन विषयों की पद्धति व प्रश्नों के उत्तर विज्ञानसम्मत होते हैं, जिसमें संभवतः पूरे-पूरे अंक आने की संभावना होती है। मगर साहित्य व मानविकीय के अन्य विषयों में शतप्रतिशत अंक पाना कैसे संभव है इन विषयों की अभिव्यक्ति में मूल्यांकन के दौरान यह संभव नहीं है कि हर छात्र ने जो उत्तर दिये हों वे मानकों की दृष्टि से उच्चकोटि के हों। दरअसल, सीबीएसई के परीक्षा परिणामों का प्रतिशत उच्चशिक्षा व रोजगारपरक संस्थानों में दाखिले की अंकों की सीमा का निर्धारण करता है। जो दूरदराज के इलाके से आने वाले प्रतिभावान विद्यार्थियों के लिए अन्याय जैसी स्थिति पैदा करता है। दरअसल, राज्यों के बोर्डों का परीक्षाफल की प्रतिशत हमेशा की तरह सीबीएसई के मुकाबले बहुत कम होता है। निःसंदेह इन स्कूलों का स्तर भी बेहतर नहीं होता और शिक्षा व्यवस्था भी तमाम खामियों से जूझ रही है। फिर नंबर देने में ऐसी उदारता नहीं दिखाई जाती जैसे सीबीएसई में उत्तरपुस्तिकाओं को जांचने में दिखाई जाती है, जिसका दंश उन्हें जीवनपर्यंत झेलना पड़ता है। ऐसे में देश के नीति-नियंताओं को इस सवाल पर गंभीरता से विचार करना चाहिए कि देश में शिक्षा पद्धति में यह विसंगति कैसे दूर की जाये।

19 स्टेशनों पर रेलवे ने बदला तत्काल टिकट बुकिंग का समय

नई दिल्ली (आरएनएस)। रेलवे ने तत्काल टिकट में बुकिंग के समय में बदलाव कर दिया है। जिस कारण आज से 19 स्टेशनों पर टिकट सुबह 11 की बजाय अब 11.30 बजे मिलेंगी।

जानकारी के अनुसार उत्तर रेलवे ने तीन मई को मंडल कार्यालय के सभी स्टेशनों पर नोटिस जारी कर दिया है। चुनाव के चलते स्टेशनों पर सुरक्षा के इंतजाम कुछ ढीले है। वहीं, सुरक्षा सिपाहियों की कमी के चलते यात्री कतारें न लगाकर पहले टिकट पाने के लिए आपस में आए दिन भिड़ जाते हैं। इसीलिए रेलवे के अधिकारियों ने यह फैसला लिया है। इसका एक और मुख्य कारण दलाली भी है। कई स्टेशनों पर दलाली जोरों पर हो रही हैं, जिस पर लगाम लगाने के लिए रेलवे को यह कदम उठाना पड़ा। रेलवे में टिकट घर पर एक ही समय पर तत्काल टिकट मिलते हैं। लेकिन, मंडल के इन 19 स्टेशनों पर मंगलवार से तत्काल और अनारक्षित टिकट सेवा 11.30 बजे से शुरू होगी।

जिन स्टेशनों के टिकट बुकिंग का समय बदला है उनमें से कानपुर ब्रिज, कुंडा हरनामगंज, फूलपुर, लम्भुआ, मुसाफिर खाना, जौनपुर सिटी, सेवापुरी, बादशाहपुर, शिवपुर, मरियाहु, खेता सराय, जलालगंज, आचार्य नारायण देव नगर, जाफराबाद, मालिपुर, गोसाईगंज, अंतु, बाबतपुर और श्रीकृष्णानगर शामिल हैं।

एयर इंडिया जेट से बी777 विमान नहीं लेगी

नई दिल्ली (आरएनएस)। सरकारी विमानन कंपनी एयर इंडिया ने परिचालन बंद कर चुकी जेट एयरवेज से बी777 विमान लेने की अपनी योजना पर आगे नहीं बढ़ने का फैसला किया है। कंपनी को लगता है कि रखरखाव की इसकी भारी जरूरतों को देखते हुए इसे व्यवसायिक रूप से चलाना उचित नहीं है।

एयरलाइन के एक प्रबंधक ने कहा, इंजीनियरिंग विभाग ने बी777 को लेकर अपना कार्य पूरा कर लिया और पाया कि इसे लेना उचित नहीं है। कुछ सप्ताह पहले, एयर इंडिया ने जेट एयरवेज के पांच बोइंग 777 विमान को ड्राई/वेट लीज पर लेने में रुचि दिखाई थी और संकट में फंसी विमानन कंपनी के प्रमुख ऋणदाता एसबीआई से बातचीत शुरू की थी। एयर इंडिया के अध्यक्ष अश्विनी लोहानी ने एसबीआई के अध्यक्ष रजनीश कुमार के साथ इस प्रस्ताव पर बातचीत की थी। लेकिन अब एयर इंडिया ने अपना निर्णय बदल दिया है, और एसबीआई के पास संभवतः जेट एयरवेज के लिए प्लान बी है।

येन में मजबूती के बीच अमेरिकी डॉलर में मामूली कमजोरी

न्यूयॉर्क (आरएनएस)। जापान की मुद्रा येन में मजबूती के बीच सोमवार को अमेरिकी डॉलर में अन्य प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले मामूली कमजोरी दर्ज की गई। यूरो, पाउंड, येन समेत छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले डॉलर की ताकत का सूचकांक डॉलर इंडेक्स 0.0012 फीसदी की कमजोरी के साथ 97.5196 रहा। वैश्विक अर्थव्यवस्था में अनिश्चितता के माहौल के बीच जापान के येन में सभी प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले सबसे ज्यादा मजबूती रही। न्यूयॉर्क ट्रेडिंग में यूरो बीते कारोबार में 1.1194 डॉलर के मुकाबले बढ़कर 1.1203 डॉलर रहा। ब्रिटिश पाउंड बीते कारोबार में 1.3164 डॉलर के मुकाबले कमजोर होकर 1.3098 डॉलर रहा।

ट्रेंडी सोने के गहनों के प्रति महिलाओं का रुझान

नई दिल्ली (आरएनएस)। इस अक्षय तृतीया पर सोने के ट्रेंडी गहनों की खरीददारी जोरदार देखने को मिल सकती है, क्योंकि आज की महिलाएं स्टायलिस्ट गहने ज्यादा पसंद करती हैं जो फोटो-शूट के लिए फिट हों। यह कहना है लाइटवेट ज्वेलरी ब्रांड मैलोरा की सीनियर वाइस प्रेसिडेंट (डिजाइन) दीपशिखा गुप्ता का। दीपशिखा गुप्ता ने कहा कि बदलती जीवनशैली और मानसिकता के साथ, आभूषणों के प्रति भी महिलाओं के दृष्टिकोण में बदलाव आया है। उन्होंने कहा कि आज की महिलाएं फैशनेबल चीजें ज्यादा पसंद करती हैं। अक्षय तृतीया को सोने की खरीददारी के लिए शुभ माना जाता है और इस दिन भारत में धनतेरस के बाद सबसे ज्यादा सोने की बिक्री होती है। लिहाजा, आभूषण विक्रेता इस त्योहार पर आभूषण की बिक्री के लिए खास तैयारी करते हैं और वे ग्राहकों को लुभाने के लिए खास पेशकश भी करते हैं जिनमें आधुनिक फैशन के अनुरूप गहनों के डिजाइन को तवज्जो दिया जाता है।

गुप्ता ने कहा कि महिलाएं हॉलीवुड और बॉलीवुड फैशन, किम कर्दाशियां और प्रमुख डिजाइनरों जैसी हस्तियों से प्रेरित हैं। उन्होंने कहा कि आज की युवा पीढ़ी आलिया भट्ट, अनुष्का शर्मा और सोने की ज्वेलरी से अपने स्टाइल गेम को रचने वाली महिलाओं से प्रभावित हैं और उनको पता है कि अब सोने के आभूषणों को पश्चिमी शैली के परिधानों के साथ मैच किया जा सकता है और वे इस तरह का प्रयोग करने लगी हैं।

रतन टाटा ने किया ओला इलेक्ट्रिक वाहन में निवेश

मुंबई (आरएनएस)। उद्योगपति और टाटा संस के सेवामुक्त चेयरमैन रतन टाटा ने घरेलू राइड शेयरिंग कंपनी ओला की नई इलेक्ट्रिक वाहन शाखा ओला इलेक्ट्रिक मॉबिलिटी प्राईवेट लिमिटेड (ओईएमपीएल) में निवेश किया है। यह जानकारी कैब सेवा प्रदाता कंपनी ओला ने सोमवार को दी।

ओईएमपीएल इस समय कई पायलट परियोजनाओं पर काम कर रही है जिसमें चार्जिग सॉल्यूशंस, बैटरी स्वापिंग स्टेशन और दोपहिया, तिपहिया और चारपहिया वाहनों का इस्तेमाल शामिल है। ओला के सह-संस्थापक और सीईओ भाविश अग्रवाल ने कहा, ओला की यात्रा को साकार करने में मेरे लिए व्यक्तिगत तौर पर श्रीमान टाटा मेरे लिए प्रेरणा के स्रोत व संरक्षक हैं। ओला इलेक्ट्रिक के बोर्ड में एक निवेशक के तौर पर उनका स्वागत करने को लेकर मैं काफी रोमांचित हूं। सस्टेनेबल मॉबिलिटी के हमारे मिशन में वह हमारे लिए प्रेरक रहे हैं। उन्होंने कहा, वह दूरदर्शी हैं और उन्होंने उद्यमियों की एक पीढ़ी को प्रेरित किया है। हम 20210 तक भारत में लाखों इलेक्ट्रिक वाहन उतारने के हमारे लक्ष्य की दिशा में काम कर रहे हैं। ऐसे में हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें उनका एक बार फिर मार्गदर्शन और समर्थन मिला है।

कोहली नए विचारों का स्वागत करते हैं : विटोरी

बेंगलुरू (आरएनएस)। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) टीम रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर के कोच डेनियल विटोरी का मानना है कि टीम के कप्तान विराट कोहली नए विचारों का स्वागत करते हैं और कप्तान के तौर पर अपने अंदर से आने वाली आवाज पर विश्वास करते हैं। विटोरी बेंगलोर की टीम में बीते छह साल से कोहली के साथ काम कर रहे हैं। कोहली हालांकि इस सीजन एक बार फिर टीम को प्लेऑफ में नहीं ले जा सके। सूत्रों ने विटोरी के हवाले से लिखा है, जब मैं उनसे बात करता हूं या कोई और कोच उनसे बात करता है।

एयरटेल का मुनाफा चौथी तिमाही में 37.5 फीसदी बढ़ा

नई दिल्ली (आरएनएस)। दूरसंचार क्षेत्र की प्रमुख कंपनी भारती एयरटेल का समेकित निवल मुनाफा बीते वित्त वर्ष की चौथी तिमाही (जनवरी-मार्च) में पिछले साल की समान अवधि के मुकाबले 37.5 फीसदी बढ़ गया। भारती एयरटेल ने सोमवार को एक बयान में कहा कि कंपनी का कुल समेकित निवल मुनाफा 2018-19 की चौथी तिमाही में 576.10 करोड़ रुपये रहा, जबकि पिछले साल इसी अवधि में कंपनी का समेकित निवल मुनाफा 419 करोड़ रुपये था। कंपनी ने कहा, 31 मार्च 2019 को समाप्त हुई तिमाही में विशेष मदों में शुल्क की दोबारा समीक्षा से संबंधित 2,052.2 करोड़ रुपये का क्रेडिट शामिल है जोकि इन शुल्कों के निर्धारण से संबंधित हालिया घोषणा पर आधारित है। एयरटेल ने बताया कि आलोच्य अवधि में कंपनी की कुल आय 20,656.8 करोड़ रुपये रही जाकि पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि की आय 19,469.8 करोड़ रुपये से 6.09 फीसदी अधिक है। हालांकि वित्त वर्ष 2018-19 में कंपनी का समेकित निवल मुनाफ पिछले वित्त वर्ष के मुकाबले 22.72 फीसदी घटकर 1,687.50 करोड़ रुपये रह गया। 2018-19 में कंपनी की कुल आय 81,071.4 करोड़ रुपये रही, जोकि पिछले वित्त वर्ष की आय 82,887.6 करोड़ रुपये से 2.19 फीसदी कम है।

आज का राशिफल

मेषः- आमदनी को उच्च बनाने में समय लग सकता है। आर्थिक स्थिति कमजोर होते हुए भी काम चलता रहेगा। प्रेम संबंधों में मधुरता रहेगी।

वृषभः- आपके मन में भी उत्साह का संचार रहेगा किंतु फिर भी यदा-कदा आशंकाएं बनी रहेंगी। आपका क्रोध बनी बनाई बात को बिगाड़ सकता है।

मिथुनः- वर्तमान स्थितिनुसार आपके व्यवसाय में उन्नति होते दिख रही है। इस दौरान आप खरीद फरोख्त कर सकते हैं।

कर्कः- पारिवारिक मामलों में आप समझदारी से कार्य लें, वैवाहिक संबंधों में कटुता आ सकती है। मदिरापान से दूर रहना आपके लिए हितकर रहेगा।

सिंहः- आपको जरा व्यवहारिक होने की जरूरत है, अति भावुकता आपको नुकसान पहुंचा सकती है। असंतुलित भोजन आहार के कारण, स्वास्थ्य संबंधी परेशानी आने की संभावना है।

कन्याः- आपको अपनी नौकरी या व्यवसाय में कुछ अप्रत्याशित समय का सामना करना पड़ सकता है।

तुलाः- परिस्थितियां आपको हाथ से निकलती लगेंगी किंतु सब कुछ आपके अनुकूल भी हो जाएगा। मांगलिक आयोजनों में भाग लेंगे। स्वास्थ्य विपरीत हो सकता है।

वृश्चिकः- आप नई चीजों को लेकर अपने आपको उत्साहित नहीं कर पाएंगे। शीघ्र ही आपको की गई गलती का अहसास होने लगेगा। स्वास्थ्य नरम रहेगा।

धनुः- व्यापारिक कार्यों में प्रतिकूलता देखने को मिलेगी। आप महत्वपूर्ण परियोजनाओं की शुरुआत कर सकते हैं। साझेदारी में सावधान रहें।

मकरः- आपका कार्य कौशल देखने लायक होगा। नई-नई योजनाओं के क्रियान्वन पर ध्यान केंद्रित रहेगा। बेहतर निवेश के लिए तुरंत कदम उठाएं।

कुंभः- आपकी ऊर्जा, करिश्मा, प्रभावशीलता इस समय शीर्ष स्तर पर बने हुए हैं। उदर विकार, पित्त विकार या ब्लड प्रेशर परेशान करेगा।

मीनः- स्वास्थ्य संबंधी कुछ परेशानियों से जूझना पड़ेगा। निरंतर भागदौड़ की स्थितियां बारंबार आ सकती हैं। आध्यात्मिक बने रहना आपके लिए लाभदायक रहेगा।

भारत के पास विश्व कप जीतने का सुनहरा अवसर : वेंगसरकर

मुंबई (आरएनएस)। पूर्व भारतीय क्रिकेटर दिलीप वेंगसरकर का मानना है कि विराट कोहली की कप्तानी वाली भारतीय क्रिकेट टीम के पास विश्व कप जीतने का शानदार मौका है। वेंगसरकर ने सोमवार को कहा,भारत के पास विश्व कप जीतने का बेहतरीन मौका है। कम से कम सेमीफाइनल तक वे जरूर जाएंगे लेकिन फाइनल के बारे में मैं कोई भविष्यवाणी नहीं कर सकता। हमारे पास बेहद प्रतिभाशाली खिलाड़ी हैं और वे सभी फार्म में हैं। मैं उन्हें अपनी शुभकामनाएं देता हूं। 2006 से 2008 तक भारतीय टीम के प्रमुख चयनकर्ता रहे वेंगसरकर ने साथ ही कहा कि आगामी मुंबई प्रीमियर लीग युवाओं को अपनी प्रतिभा दिखाने का अच्छा मौका देगी।

उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि सभी खिलाड़ियों के पास यह एक अच्छा मौका है। इसमें 160 खिलाड़ी खेलते नजर आएंगे।

उपभोग प्रवृति में सुस्ती चिंताजनक : कोटक

नई दिल्ली (आरएनएस)। आय में पर्याप्त वृद्धि नहीं होने से भारतीय परिवारों को अपने उपभोग में कटौती करनी पड़ी होगी और उपभोग में कमी का यह पैटर्न चिंताजनक है। यह बात हालिया एक रिपोर्ट में कही गई है। कोटक इंस्टीट्यूशनल इक्विटीज रिसर्च की रिपोर्ट में कहा गया है कि आने वाली सरकार को देश की कमजोर आर्थिक विकास दर में सुधार लाने के दबाव से जूझना पड़ सकता है। यह रिपोर्ट समष्टिगत और व्यष्टिगत आंकड़ों पर आधारित है।

रिपोर्ट के अनुसार, चौथी तिमाही (वित्त वर्ष 2019) में उपभोक्ता वस्तुओं की कंपनियों की कमजोर संवृद्धि दर आवासीय क्षेत्र में पिछले पांच-छह साल में और पिछले एक साल से अधिक समय से ऑटोमोबाइल के क्षेत्र में मंदी को दर्शाती है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि आवासी क्षेत्र में मांग पिछले कई साल से कमजोर बनी हुई है और प्रॉपर्टी की कीमतें मुख्य रूप से स्थिर बनी हुई है। आवासीय रियल स्टेट क्षेत्र में कुल व्यय काफी कम है। रिपोर्ट में बताया गया है कि ऑटो क्षेत्र की बिक्री पिछले वित्त वर्ष की दूसरी छमाही से सुस्त बनी हुई है। उपभोक्ता वस्तुओं की कंपनियों की बिक्री को देखें तो सामान्य उपभोग की प्रवृति भी कमजोर बनी हुई है।

भुना मशरूम बनाने की विधि ...

छोटे-से दिखने वाले मशरूम में भरपूर मात्रा में पोषक तत्व पाए जाते हैं। मशरूम खाने के शौकीन हैं तो बनाएं भुना मशरूम, यहां जानें बनाने की विधिः-

सामग्री-

'बारीक कटा मशरूम- 400 ग्राम 'बारीक कटा हरा प्याज- 2 'पानी- 2 कप 'बटर- 3 चम्मच 'कॉर्न फ्लो - 1 चम्मच 'दूध- 1 कप 'नमक व काली मिर्च- स्वादानुसार 'बारीक कटी धनिया पत्ती- 4 चम्मच

विधि-

एक पैन में तेल गर्म करें और उसमें कटा हुआ मशरूम और हरा प्याज डालें। प्याज और मशरूम के मुलायम होने तक पकाएं। नमक और काली मिर्च पाउडर डालकर मिलाएं। गैस ऑफ करें और मशरूम को ठंडा होने दें। अब मशरूम को अन्य सभी सामग्री के साथ ब्लेंडर में डालकर अच्छी तरह से प्यूरी तैयार कर लें।सूप को वापस पैन में डालकर गाढ़ा होने तक पकाएं। जरूरत हो तो थोड़ा-सा पानी भी मिलाएं। नमक और काली मिर्च को स्वादानुसार एडजस्ट करें। धनिया पत्ती से गार्निश कर गर्मागर्म सर्व करें।

शब्द सामर्थ्य-57

बाएं से दाएं
1. भारत के वर्तमान वित्तमंत्री 6. हित, उपकार 7. असमान, पूर्वोत्तर का एक राज्य 8. किसी वस्तु व्यक्ति आदि के पहचान सूचक संबोधन का शब्द, संज्ञा 10. शवस्थल पर बनाया गया मकान, योग का अंतिम अंग, तपस्या 13. इंकार करना, ना कहना 14. पिता, कलर्क, सम्मानीय व्यक्ति 15. आय पर लगने वाला टैक्स, इंकमटैक्स 16. प्रतिद्वंद्वी, प्रेमिका का दूसरा प्रेमी 17. परंपरा, रीति, रिवाज 20. रुप से युक्त, चिन्ह, लक्षण, नाटक, एक साहित्यिक अलंकार 23. लोग, प्रजा 25. नामी, नामवर, प्रसिद्ध 27. संसार का स्वामी, बादशाह, सम्राट, ईश्वर 28. फैलाना, खिंचाव पैदा करना।

ऊपर से नीचे
1. मारना, प्रहार करना, आघात करना 2. मिथ्याअभिमान, आडंबर 3. विपत्ति, आफत 4. मालदार, धनवान, अमीर 5. ज्ञान प्राप्त करना, अनुमान लगाना, कल्पना करना 7. हक 9. विवश, लाचार 11. मानकंद, नापने का पैमाना 12. अपमानित और तिरस्कृत 17. संतान उत्पन्न करने की क्रिया, जन्म देने की क्रिया 18. लंबे कपड़े का गट्ठा, पशुओं को रखने की जगह 19. जलयान, वायुयान, जलपोत 21. आश्रय, सहारा 22. थोड़ा, जरा, तनिक 24. जुर्म, गुनाह 26. बाघ की तरह का धारीदार हिंसक एवं विशाल पशु।

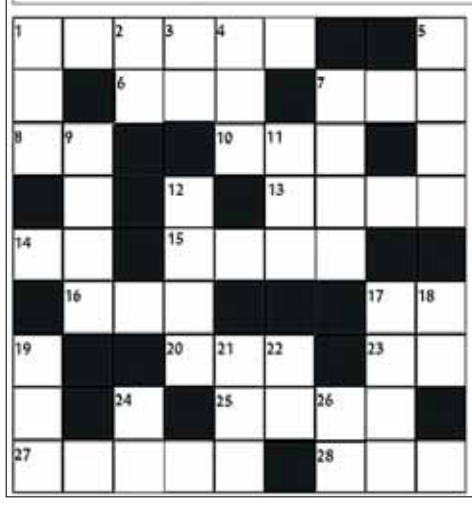

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 056 का हल

भू	कं	प	■	फा	य	दा	■	स
प	■	ल	ला	ट	■	य	ती	म
ति	ल	क	■	क	न	क	■	झ
■	क्ष्म	■	■	■	रे	■	■	■
ग	ण	क	■	सं	श	य	■	सौ
ह	■	या	च	क	■	म	न्न	त
रा	क्ष	स	■	र	क्ष	क	■	न
■	त्रि	■	■	■	मि	■	■	■
शा	य	री	■	का	त	र	■	गो

सू-दोकू-57

	8				1		5	
6			8			2		3
	3				2		1	
		3		9		5		4
5			3				9	
		4		2				6
4			2		3		6	
		6				8		7
	2	9	7		6			

नियम
1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और ऊपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र 56 का हल

5	3	9	7	4	8	6	2	1
2	1	6	5	9	3	4	7	6
4	7	8	1	6	2	3	5	9
3	6	1	8	5	9	2	4	7
8	5	2	3	7	4	1	9	6
7	9	4	2	1	6	8	3	5
6	4	7	9	2	1	5	6	3
1	8	5	4	3	7	9	6	2
9	2	3	6	8	5	7	1	4